International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5.12
Received: 16-12-2020; Accepted: 31-12-2020; Published: 22-01-2021
www.educationjournal.org
Volume 6; Issue 1; 2021; Page No. 22-25

नवभारतः गांधी दर्शन एवं स्वदेशी

आदित्य कुमार
शोध छात्र, राजनीति विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, भारत

सारांश
आज किसी से भी यह छुपा नहीं है कि समूची मानव सभ्यता एक बड़े संकट एवं उथल–पुथल के दौर से गुजर रही है। उसके समक्ष अपने अस्तित्व का सबसे बड़ा संकट खड़ा है, साथ ही आर्थिक गतिविधियों की स्थिति अपने नाजुक दौर में है। ऐसे में हमें गांधी तथा गांधीवादी दर्शन से प्रेरणा लेने की आवश्यकता है। आज हमें वैज्ञानिक क्रांति, बहुराष्ट्रीय कंपनियों से जुड़ाव के साथ–साथ स्थानीयता के भाव को बनाए रखने की जरूरत है। आधुनिक विश्व 'वैश्वीकरण' व 'बाजारीकरण' का है, आज सब कुछ अन्तर्राष्ट्रीय बाजार से जुड़ चुका है, उत्पादन की बढ़ती मात्रा के साथ 'बाजार एवं उत्पादन प्रक्रिया' अन्तिम मनुष्य तक पहुंच चुकी है, ऐसे में गांधीवादी दर्शन अधिक प्रासंगिक हो उठता है।

मूल शब्दः राष्ट्रपिता, आत्मनिर्भर, समावेशी, स्वदेशी, अपरिग्रह व स्वच्छता आदि।

प्रस्तावना
भारत ने जहॉ एक तरफ सन् 2019 में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं जयंती मनाया है तो वहीं दूसरी तरफ सन् 2022 में 'स्वतंत्रता' की 75वीं वर्षगांठ मनाने जा रहा है। ये दोनों ही अवसर हमें गर्व की अनुभूति कराने वाले तथा एक 'नए भारत' के सृजन की प्रेरणा देने वाले हैं। एक तरफ जहां गांधीवादी दर्शन से हमें गांधी के मूल्यों पर चलने एवं उसे आत्मसात् करने की सीख मिलती है तो वहीं स्वदेशी व खादी अपनाने के साथ–साथ आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा भी मिलती है। दूसरी तरफ हमारे अन्दर 'नवभारत' के निर्माण की उच्चाकांक्षा का सृजन भी होता है। एक ऐसे भारत के निर्माण की हमें प्रेरणा मिलती है जो आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो, समकालीन विश्व व्यवस्था के लिए मार्गदर्शक हो, हमें नवाचार व उन्नति हेतु प्रेरित व प्रोत्साहित करता हो तथा विभिन्न सामाजिक जटिलताओं व विविध समस्याओं के मध्य एक 'समतामूलक समाज' की स्थापना करता हो। साथ ही सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व पर्यावरणीय समावेशन के साथ–साथ समावेशी विकास का मार्ग प्रशस्त करता हो।

नवभारत की संकल्पना
प्रधानमंत्री जी ने नवभारत के जिस स्वरूप का उल्लेख किया है उसमें भ्रष्टाचार मुक्त भारत, स्वच्छ भारत–स्वस्थ भारत, गरीबी व बेरोजगारी मुक्त भारत, बेघरी से मुक्त भारत, सांप्रदायिकता व जातिवाद से मुक्त भारत, आत्मनिर्भर और स्वावलम्बी भारत की रूपरेखा खींची गई है। प्रधानमंत्री द्वारा उल्लिखित 'आत्मनिर्भर भारत' में महात्मा गांधी, डॉ0 भीमराव अम्बेडकर, श्यामा प्रसाद मुखर्जी व पं0 दीनदयाल उपाध्याय के विजन नजर आते हैं। जैसा कि पं0 दीनदयाल उपाध्याय ने कहा है 'स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हमारे दृष्टिकोण में अंतर आया है, अब हम प्रत्येक प्रश्न को आर्थिक दृष्टिकोण से देखते हैं, हमारी परम्परा और संस्कृति हमें यह बताती है कि मनुष्य केवल भौतिक आवश्यकताओं का पिंड मात्र नहीं है बल्कि वह एक आध्यात्मिक मानव भी है, अतएव देश और काल की विभिन्न परिस्थितियों के कारण भी हमारे विकास का मार्ग पाश्चात्य जगत से अलग प्रकार का होना चाहिए' तो वहीं दूसरी तरफ महात्मा गांधी जी ने स्वदेशी, अस्तेय, अपरिग्रह व स्वच्छता जैसे गंभीर मुद्दों पर बल दिया। 'गांधीवादी दर्शन' की संकल्पना आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना कि गांधी के जीवन काल में थी। इस लेख के अंतर्गत महात्मा गांधी के स्वदेशी दर्शन व खादी से जुड़े विचारों एवं नवभारत में उसकी प्रासंगिकता तथा निकट भविष्य की संभावनाओं पर चर्चा करेंगे।
नवभारत एक ऐसे भारत के निर्माण की संकल्पना है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति स्वयं में विशिष्ट प्रकार की योग्यता युक्त अनुभव करता हो, जैसा कि गांधी जी ने स्वतंत्रता आंदोलन के समय किया था। प्रत्येक व्यक्ति स्वदेशी का अनुपालन करता हो जिसमें स्वदेशी न केवल वस्त्रों का बल्कि स्वदेशी बोलचाल, भाषा, संस्कृति व आचरण का भी हो। उनका मानना था कि लोग खादी पहन कर अपने स्वदेशी धर्म की इतिश्री मान लेते हैं किन्तु खादी हमारे स्वदेशी धर्म की प्रथम पायदान है उसकी इतिश्री अथवा आखिरी सीमा नहीं। सदियों पुरानी भारतीय संस्कृति अर्थात् 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' व 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की स्वस्थ परम्परा, धर्मनिरपेक्ष, लोक कल्याण व लोकतांत्रिक मूल्य तथा सामाजिक न्याय स्थापित करने की भावना आदि के स्वस्थ आचरण द्वारा ही महात्मा गांधी के 'सपनों के भारत' के साथ–साथ वर्तमान प्रधानमंत्री के नवभारत की संकल्पना को सार्थक सिद्ध कर सकते हैं। आने वाले कुछ वर्षों तक अगर हम 'पहचान की राजनीति' तथा 'वर्चस्व की राजनीति' से आगे बढ़कर उक्त मूल्यों से युक्त आचरण करें तो नवभारत के निर्माण में हमारा अद्वितीय योगदान होगा। निःसन्देह प्रधानमंत्री जी द्वारा इस दिशा में कई ठोस कदम उठाए गए हैं व कई महत्वपूर्ण योजनाओं की पहल की गयी है फिर भी नवभारत के निर्माण में प्रत्येक भारतवासी की भूमिका एवं उत्तरदायित्व महत्वपूर्ण है।

महात्मा गांधी एवं स्वदेशी
25 मई सन् 1915 को महात्मा गांधी जी ने 'कोचराव' में सत्याग्रह आश्रम' की स्थापना की, जिसे बाद में साबरमती स्थानांतरित कर दिया गया। गांधी जी ने आश्रम की स्थापना के समय समाज सेवा का महाव्रत लिया जिससे लोक कल्याण के संकल्प को सिद्ध किया जा सके। इस हेतु गांधी जी ने 11 महाव्रतों (एकादश व्रत) के पालन की बात कही, जिससे आश्रम के सदस्य स्वयं को देश सेवा एवं विश्व कल्याण के योग्य बनाने में अनवरत प्रयास कर सकें। गांधी जी के एकादश व्रत थे,– (1) सत्य, (2) अहिंसा, (3) ब्रह्मचर्य, (4) अस्वाद, (5) अस्तेय, (6) अपरिग्रह, (7) शरीर

श्रम, (8) स्वदेशी, (9) निर्भीकता, (10) अस्पृश्यता निवारण एवं (11) सहनशीलता। जहॉ तक महात्मा गांधी के एकादश व्रत में आठवें व्रत अथवा स्वदेशी का प्रश्न है तो इस संदर्भ में गांधीजी का मानना था कि 'मनुष्य सभी कार्यों को स्वयं करने में सक्षम नहीं है, इसलिए उसे सर्वप्रथम् अपने पड़ोसी की सेवा करनी चाहिए तथा अपने आसपास के लोगों को प्राथमिकता देते हुए उनकी सेवा एवं सहायता करनी चाहिए, यही स्वदेशी है, इसी के माध्यम से व्यक्ति विश्व की सेवा कर सकता है, विश्व कल्याण में अपना योगदान दे सकता है।' जहां तक संभव हो मनुष्य को स्थानीय वस्तुओं से अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करनी चाहिए, स्वदेशी का यह मार्ग हमें त्याग एवं बलिदान का मार्ग दिखाता है। ''पॉवर्टी एंड अनब्रिटिश रूल इन इंडिया– Poverty and Un-British Rule in India (दादा भाई नौरोजी) तथा ''द इकोनामिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया अण्डर अर्ली ब्रिटिश रूल– The Economic History of India Under Early British Rule (आर0 सी0 दत्त) में भारतीय अर्थव्यवस्था की खस्ता हालात तथा अंग्रेजों की शोषणकारी नीति की जो रूपरेखा प्रस्तुत की गई थी उसने स्वदेशी की भावना का आधार निर्मित किया तथा आगे चलकर महात्मा गांधी जी के नेतृत्व में स्वदेशी भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का प्रमुख आधार बना, जिसमें उन्होंने चरखे को विशेष महत्व दिया था। सन् 1920 में स्वदेशी आन्दोलन में खादी को राष्ट्रवाद के प्रतीक के रूप में इस्तेमाल करना शुरू किया गया जो आगे चलकर भारत में 'आजादी की पोशाक' तथा 'भारत की आत्मनिर्भरता' का शाश्वत प्रतीक बन गया। साथ ही यह अंग्रेज तथा अंग्रेजी पहनावे के विरोध का भी प्रतीक बन गया।

गांधीजी का मानना था कि स्वदेशी व खादी ही ऐसे माध्यम हैं जिनके द्वारा न केवल भारतीय अर्थव्यवस्था का पुनरुद्धार किया जा सकता है बल्कि भारतीय सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक ताने–बाने को एक सूत्र में पिरोया भी जा सकता है तथा इसकं माध्यम से भारतीयों को रोजगार भी वापस मिल सकता है। सन् 1934 में खादी के महत्व को रेखांकित करते हुए गांधी जी ने कहा कि 'खादी ग्राम सौर प्रणाली का सूर्य है' जिसके सन्दर्भ में गांधी जी की स्पष्ट धारणा रही है कि यदि सभी भारतीय खादी वस्त्र अथवा पोशाक पहने, सभी का जीवन खादी रूपी सूर्य के इर्द–गिर्द पुष्पित व पल्लवित हो तो भारत में अमीरी और गरीबी का भेदभाव मिट सकता है। निःसन्देह गांधी का यह मार्ग हमें 'ग्राम स्वराज' तक ले जाता है। गांधी जी ने कहा था 'भारत की आत्मा गांवों में बसती है' जिसके कारण उन्होंने गांव के विकास को प्रमुखता दी और स्थानीयता के महत्व को समझाते हुए स्वराज, पंचायती राज, ग्रामोंद्योग और महिलाओं की शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जिससे एक सशक्त, स्वावलंबी एवं आत्मनिर्भर भारत का मार्ग प्रशस्त हो सके। आगे चलकर इसी उद्देश्य के साथ सन् 1956 में 'खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग' (केवीआईसी) की स्थापना की गई। इसके साथ–साथ 73वें संविधान संशोधन अधिनियम के तहत 'स्वायत्त पंचायती राज व्यवस्था' की स्थापना की गयी जिसके माध्यम से गांधी के ग्राम स्वराज की संकल्पना को साकार करने के साथ–साथ 'खादी, ग्रामोद्योग और कुटीर उद्योग' को संविधान की 11वीं अनुसूची की 'नवीं प्रविष्टि' में सम्मिलित करते हुए खादी की महत्ता व उसकी प्रासंगिकता को स्वीकार किया गया है।

वर्तमान प्रधानमंत्री द्वारा नवभारत की संकल्पना के साथ–साथ स्वदेशी पर बल दिया गया, प्रधानमंत्री जी द्वारा प्रत्येक व्यक्ति को कम से कम एक खादी वस्त्र पहनने का आह्वाहन किया गया, जिससे भारतीय हथकरघा उद्योग को पुनर्जीवित करने के साथ–साथ गांधी दर्शन एवं गांधी जी के सपनों को साकार किया जा सके। प्रधानमंत्री जी ने लोगों से अपील करते हुए कहा कि 'जब आप खादी खरीदते हैं तो किसी एक गरीब परिवार के घर में समृद्धि का दिया जलाते हैं।' इसके अतिरिक्त प्रधानमंत्री जी ने राष्ट्रीय हथकरघा निवेश दिवस के अपने सम्बोधन में हथकरघे के महत्व को स्पष्ट करते हुए कहा था 'हथकरघे में प्रमुख रूप से कपास, रेशम, जूट जैसे प्राकृतिक रेशे इस्तेमाल होते हैं अतः हम सब्जियों के रंगों तथा अन्य जैविक उत्पादों का प्रयोग कर इसे और भी पर्यावरण हितैषी बना सकते हैं।' इस हेतु भारत सरकार द्वारा अनेक कदम भी उठाए गए हैं जिनमें भारत सरकार ने खादी एवं ग्रामोद्योग क्षेत्र में निवेश को बढ़ावा देने हेतु 850 करोड़ के निवेश के साथ–साथ 800 स्वस्फूर्ति क्लस्टर की स्थापना की बात की है, साथ ही 4 लाख बुनकरों को लाभान्वित करने का लक्ष्य रखा गया है। इसके साथ साथ हथकरघा क्लस्टर हेतु सहायता राशि के रूप में देय राशि ₹60 लाख से बढ़ाकर ₹2 करोड़ कर दी गई है। साथ ही राष्ट्रीय कौशल विकास मिशन के तहत सन् 2022 तक देश के 40 करोड़ युवाओं को प्रशिक्षित करने का लक्ष्य भी रखा गया है जो कि खादी एवं ग्रामोद्योग की दिशा में भारत सरकार की एक बड़ी पहल मानी जा सकती है, जिससे न केवल उद्योगों से जुड़े मजदूरों को लाभ होगा बल्कि भारत में रोजगार के अवसर भी बढ़ेंगे तथा किसानों की आय में भी वृद्धि हो सकेगी। विदित है कि गांधी जी कौशल विकास की जरूरत की बात बहुत पहले ही कर रहे थे। अपने पत्र 'हरिजन सेवक' के 15 मार्च 1935 के अंक में उन्होंने कहा था 'मेरी राय में तो इस देश में जहां लाखों आदमी भूखों मरते हैं, बुद्धिपूर्वक किया जाने वाला श्रम ही सच्ची प्राथमिक या प्रौढ़शिक्षा है।

भारत सरकार ने कोविड 19 महामारी के समय लॉकडउन के दौर में समझदारी का परिचय देते हुए आत्मनिर्भर और स्वावलम्बी बनने हेतु स्वदेशी का नारा दिया। ऐसे में हो सकता है कि गांधी की राह पर फिर से चलकर हम अपनी अर्थव्यवस्था को जीवन–शक्ति प्रदान कर सकें। किन्तु भारत वैश्वीकरण के दौर में स्वदेशी की राह पर कैसे चलेगा? ऐसे में यह समझना जरूरी है। भारत सरकार ने आत्मनिर्भर अभियान को जमीनी स्तर पर लागू करने हेतु व्यापक रणनीति बनाई है। वर्तमान वित्तमंत्री निर्मला सीतारमन ने 20 लाख करोड़ के आर्थिक पैकेज की घोषणा की। आर्थिक पैकेज से देश के उद्योग, कारोबार क्षेत्र को जो लाभ मिलेगा उससे रोजगार के मौके बढ़ेंगे। आज के समय में एक मुद्दा यह भी है कि लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुँचे किन्तु वह अंतिम व्यक्ति गांधी के समय में कहां रहता था और आज अंतिम व्यक्ति की हालत क्या है? उनके मध्य बड़ा अंतराल है। अतः हमें तय करना होगा कि आत्मनिर्भरता देश की होनी चाहिए या व्यक्ति की अथवा फिर दोनों की। भारत में बहुसंख्यक (मजदूरों और किसानों) के आत्मनिर्भरता का आधार संसाधनों और अवसरों का समान वितरण में निहित है जो कि गांधी–दर्शन और आचरण से ही संभव है। ऐसे में नवभारत के निर्माण में गांधी की स्वदेशी की संकल्पना तथा गांधी–दर्शन एवं खादी की महत्ता स्वमेव उभर कर सामने आती है।

खादी के समक्ष चुनौतियां

आधुनिक समय में खादी बाजार व खादी उत्पाद को निम्नलिखित चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा हैः–

1. ब्रांडिंग की कमी,
2. बाजार की कमी,
3. बड़ी कंपनियों से प्रतिस्पर्धा,
4. पर्याप्त संख्या में रोजगार की कमी,
5. कम पारिश्रमिक तथा कम आय,
6. खादी के लिए कच्चे माल की समस्या तथा
7. खादी उद्योग में निवेश की कमी आदि।

उपरोक्त चुनौतियों पर भारत सरकार द्वारा व्यापक स्तर पर ध्यान देने की आवश्यकता है, इसके साथ–साथ हम भारतीयों का भी यह दायित्व है कि गांधी के सपनों को साकार करने तथा भारत

को आत्मनिर्भर बनाने में अपनी भूमिका को स्वीकार करते हुए आगे बढ़ें।

गांधी जी ने स्वदेशी के साथ–साथ अपने जीवन मूल्य में स्वच्छता पर अत्यधिक बल दिया था तथा उसे स्वाधीनता से अधिक मूल्यवान बताया था। इसके लिए उन्होंने 'स्वच्छाग्रह' पर विशेष बल दिया। यद्यपि गांधी जी पाश्चात्यीकरण के प्रबल विरोधी थे किन्तु वे पश्चात्य के देशों में सफाई के स्तर से इतना प्रभावित थे कि उन्होंने पश्चात्य से सफाई के सन्दर्भ में सीख लेने की वकालत करते हुए पश्चात्य से 'सफाई का विज्ञान' सीखने की बात की। वर्तमान राष्ट्रीय लोकतांत्रिक गठबंधन की सरकार द्वारा स्वच्छ भारत मिशन, स्वच्छ संकल्प से स्वच्छ सिद्धि, स्वच्छता ही सेवा, दरवाजा बंद अभियान आदि जैसे अभियान चलाये गये, जिसे व्यापक जन समर्थन भी प्राप्त हुआ है। भारत सरकार के प्रयत्न, स्वच्छता में जनता की भागीदारी तथा स्वच्छ भारत अभियान की भूमिका की ओर संकेत करते हुए राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद जी ने स्वच्छ भारत मिशन की सबसे बड़ी विशेषता बताते हुए कहा है कि यह प्रत्येक भारतीय का अभियान बन गया है जिससे हमारे समाज में एक नई जागरूकता पैदा हुई।

आज कोविड–19 महामारी के वैश्विक प्रभाव एवं चीन के साथ बिगड़ते रिश्ते ने गांधी के ग्राम स्वराज तथा आत्मनिर्भर भारत के सपने को अधिक प्रासंगिक बना दिया है। आज वैश्वीकरण के दौर में पूर्ण आत्मनिर्भरता कदाचित् मुमकिन नहीं है क्योंकि विश्व अर्थव्यवस्था पर निर्भरता इतनी बढ़ चुकी है कि उससे वापस नहीं आया जा सकता। किन्तु यह सम्भव है कि स्थानीय वस्तुओं के उपभोग को बढ़ावा देकर तथा स्वदेशी चीजों के उपभोग के माध्यम से वैश्विक निर्भरता को कम अवश्य किया जा सकता है, जैसा कि हमारे प्रधानमंत्री जी ने 'वोकल फॉर लोकल' तथा 'स्थानीय ब्रांड' के उपभोग का आह्वाहन किया जिससे न केवल घरेलू सप्लाई चैन को नया जीवन मिलेगा बल्कि भारतीय अर्थव्यवस्था अधिक आत्मनिर्भर और अधिक सुदृढ़ बन सकेगी। इस संदर्भ में हमें यह भी समझना जरूरी है कि भारत से चीन को कुल 50 अरब डालर का अतिरेक प्राप्त होता है जो कि उसके कुल व्यापार अतिरेक का 11.6 प्रतिशत है जबकि अमेरिका का चीन से व्यापार घाटा चीनी के समस्त व्यापार अतिरेक का 83 प्रतिशत है अर्थात् भारत एवं अमेरिका का सम्मिलित प्रयास समस्त चीनी अतिरेक को समाप्त कर सकता है, साथ ही यह कदम भारत की आत्मनिर्भरता का मार्ग प्रशस्त कर सकता है। विदित है कि भारत के कुल अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का 10 प्रतिशत से अधिक की हिस्सेदारी अकेले चीन की है। वर्ष 2018–19 के आंकड़े के अनुसार भारत द्वारा किए जाने वाले कुल आयात एवं निर्यात में चीन का हिस्सा क्रमशः 14 प्रतिशत व 5 प्रतिशत है। इसके विपरीत चीन के कुल आयात व निर्यात में भारत की हिस्सेदारी क्रमशः 0.9 प्रतिशत व 3 प्रतिशत रही है। संक्षेप में कहें तो आर्थिक गतिविधियों में भारत की चीन पर निर्भरता अधिक है। ऐसे में चीनी बाजार व चीनी वस्तुओं का आज अचानक बहिष्कार कदाचित् भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए हितकर न होगा और न ही यह भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास का समुचित विकल्प हो सकता है।

संभावनाएं

वर्तमान परिस्थितियों में यदि खादी की भूमिका पर नजर डालें तो यह स्पष्ट होता है कि आज बढ़ते पश्चिमी अंधानुकरण की पुरजोर कोशिश और आधुनिक दिखने की सोच में खादी व स्वदेशी दर्शन गुम हो गया है। खादी का भले ही आज 'स्वदेशी आंदोलन के दौर' जैसा महत्व नहीं है लेकिन फिर भी भारत के साथ–साथ विदेशों में भी खादी ने निरन्तर अपनी प्रासंगिकता का परिचय दिया है। प्रधानमंत्री जी ने अपने संबोधन में कोरोना महामारी के दौर को 'अवसर' के रूप में लेने की बात कही। एक ऐसे अवसर के रूप में जिसमें नैतिकता, कर्तव्यनिष्ठा एवं उत्तरदायित्व का बोध हो, जिसमें स्थानीयता व देशीपन की भावना निहित हो। उपरोक्त परिस्थितियों में इस तथ्य से इन्कार नहीं किया जा सकता कि निकट भविष्य में भारत के समक्ष स्वदेशी, आत्मनिर्भर व नवभारत के निर्माण की प्रबल संभावनाएं हैं किंतु इस हेतु भारत द्वारा विभिन्न कदम उठाए जाने आवश्यक है:–

1. भारत को अपनी संस्कृति 'वसुधैव कुटुंबकम' व 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' के साथ–साथ लोक कल्याण, लोकतांत्रिक मूल्य, संवैधानिक एवं मानवीय मूल्यों के पदचिन्हों पर आगे बढ़ना होगा।
2. ग्रामोद्योग, हथकरघा उद्योग आदि स्वदेशी चीजों के साथ–साथ मनरेगा एवं स्वयं सहायता समूह पर अधिक बल देना होगा। इसके अतिरिक्त मेड इन इंडिया, स्टार्टअप आदि जैसी योजनाओं को अधिक समावेशी सुगम एवं प्रभावशाली बनाना होगा।
3. खादी से जुड़ी समस्याओं, यथा– ब्रांडिंग की कमी, बाजार की कमी, खादी के लिए कच्चे माल की समस्या तथा खादी उद्योग में निवेश की कमी आदि जैसी समस्याओं का यथाशीघ्र समाधान करना होगा।
4. औद्योगीकरण की प्रक्रिया को बड़े शहरों से बाहर अन्य छोटे शहरों–कस्बों व गावों तक ले जाना होगा, जिससे मजदूरों के प्रवासन से बचा जा सके तथा श्रम की पर्याप्त उपलब्धता भी सुनिश्चित हो सके एवं साथ ही समावेशी विकास की एक विस्तृत रूपरेखा तय किया जा सके।
5. आत्मनिर्भरता, जिसके अंतर्गत पांच स्तंभ, यथा– अर्थव्यवस्था (Economy) अवसंरचना (Infrastructure) तकनीकी (Technology) गतिशील (वाइब्रेंट) जननांकिकी, (Vibrant Demography), तथा मांग (डिमांड) (Demand) को मजबूत बनाना होगा।
6. देश में अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने हेतु विनिर्माण क्षेत्रों में तथा ग्रामीण मोर्चे को और अधिक सुदृढ़ करना होगा, स्वदेशी व खादी को बढावा देना होगा जिससे न केवल रोजगार का सृजन हो बल्कि पूंजी प्रवाह एवं पूर्ति–मांग श्रृंखला को मजबूत बनाया जा सके।
7. चीन के बहिष्कार तथा चीनी सामानों के बहिष्कार के पूर्व स्वयं को इतना सक्षम बनाना होगा कि चीन पर हमारी निर्भरता समाप्त हो सके।

निष्कर्ष

प्रधानमन्त्री जी का मानना है कि नवभारत की जब भी हम बात करते हैं, तो सबका साथ सबका विकास उसके मूल में है। वर्तमान में महामारी से उपजे सामाजिक आर्थिक संकट से निपटने के लिए स्वदेशी एक प्रमुख आधार बन सकती है क्योंकि अमेरिका द्वारा भारतीयों के लिए रास्ता बंद किए जाने से भारतीय जनशक्ति को स्वदेशी का आधार दिया जाना उचित होगा, जिससे हमारी जनशक्ति स्वयं के देश के विकास में अपनी भूमिका का निर्वहन कर सके। बहरहाल वर्तमान में उपजी संकटकालीन परिस्थितियों में स्वदेशी का महत्व सिद्ध करते हुए हमें नवभारत के निर्माण पर विचार करना चाहिए। संकटपूर्ण परिस्थितियों में प्रधानमंत्री मोदी के आत्मनिर्भर भारत अभियान में स्वदेशी का कितना भाव है इस पर स्पष्ट रुप से कुछ भी नहीं कहा जा सकता फिर भी यदि हम देखें तो अंततः यही निष्कर्ष पाते हैं कि नवभारत के निर्माण का मार्ग स्वदेशी व गांधीवादी दर्शन से होकर जाता है, ऐसे में वर्तमान समय में स्वदेशी की प्रासंगिकता और महत्व स्वमेव ही बढ़ जाता है। आज देश हित में भी आवश्यक हो गया है कि गांधीजी के स्वदेशी दर्शन को भारतीय आत्मनिर्भरता और स्वावलंबन का आधार बनाया जाए।

स्वदेशी का किसी भी देश को संपन्न बनाने में एक विशेष योगदान होता है इस भाव के प्रति हमारा समर्पण एक ओर हमें आत्मनिर्भर बनाता है वहीं दूसरी ओर अन्य देशों पर हमारी निर्भरता को कम करता है। आज हमने अपने बाजारों को दूसरे देशों के हवाले कर रखा है जिससे उन देशों का आधार मजबूत होता जा रहे हैं और हमारा देश आर्थिक रूप से खोखला होकर अन्य देशों पर अपनी निर्भरता के नए मुकाम हासिल कर रहे हैं। ऐसे में वर्तमान परिस्थितियों में स्वदेशी की भूमिका और प्रासंगिकता बखूबी महसूस की जा सकती है। संक्षेप में कहें तो महात्मा गांधी अपने विभिन्न विचारों के सन्दर्भ में सार्वभौमिक व सार्वकालिक हैं, जिनके विचारों की प्रासंगिकता कभी कम नहीं हो सकती उनके विचार परिवर्तित समस्याओं के सांदर्भिक समाधान हेतु भी समीचीन होती है।

संदर्भ सूची

1. सक्सेना, विनय कुमारः खादीः आधुनिक भारत के निर्माण की ताकत, योजना, अंक 10, अक्टूबर 2016.
2. ग्रामोदय संकल्प, भारत सरकार, अक्टूबर 2018–जनवरी 2019 अंक 2, अंक 5.
3. सिंह, स्वदेशः नए भारत में सामाजिक न्याय, योजना, अंक 10, अक्टूबर 2017.
4. सक्सेना, ऋषभ कृष्णः खादी में रोजगार की संभावनाएं, कुरुक्षेत्र, अंक 12, अक्टूबर 2015.
5. राजपूत, जगमोहन सिंहः गांधी को समझने का समय, जनसत्ता, 2 अक्टूबर 2019.
6. गांधी, मोहनदास करमचंदः हिंद स्वराज, सेनेटरी एडिशन, राजपाल पब्लिकेशन, 2013.
7. गांधी, एम0 के0ः ऑटोबायोग्राफी ऑफ द स्टोरी ऑफ माय एक्सपेरिमेन्ट विथ ट्रुथ, अहमदाबाद, नवजीवन पब्लिकेशन हाउस।
8. Josheph, Sibi k.: Understanding Gandhi's Viion of Swadeshi, mkgandhi.org
9. RSS Pitches for Swadeshi Model of Development, The Hindu, 2020.
10. Dharmpal Gita. Covid asks us to heed Gandhian Principles of Swadeshi and Sarvodaya, 2020.
11. Joshi, Dr. S. K.: Time for a NewParadigm of Swadeshi, Times of India, 2020.